कुशाग्र जैन, राजा रवि वर्मा: भारतीय चित्रकला के महानायक, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 25-26

राजा रवि वर्मा: भारतीय चित्रकला के महानायक

कुशाग्र जैन*

भारतीय चित्रकला के इतिहास में कई कलाकारों ने अपने समय में महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन कुछ ही कलाकारों ने देश और काल को पार करते हुए आम लोगों पर गहरी छाप छोड़ी। 29 अप्रैल 1848 को जन्मे राजा रवि वर्मा भी एक महान कलाकार थे। उन्हें भारतीय कला को एक नई दिशा और एक नया रूप भी मिला। भारतीय परंपरा, धर्म, संस्कृति और कहानियों को उनकी चित्रकला में यूरोपीय शैली के यथार्थवादी चित्रण से प्रस्तुत किया गया है।

राजा रवि वर्मा का जन्म कुलीन परिवार में हुआ था, जो केरल के किलिमानूर में था। उनकी माता, उमाम्बा थंपुराट्टी, एक विद्वान कवयित्री थीं, जिन्होंने 'पार्वती स्वयंवरम्' जैसे ग्रंथ लिखा था। पिता एझुमाविल नीलकंठन भट्टतिरिपाद संस्कृत और आयुर्वेद में प्रवीण थे।

रवि वर्मा का परिवार शाही परिवार से संबंधित था। उनके विवाह ने उन्हें राजघराने से अधिक करीब लाया। उनका विवाह मावेलिकरा की राजकुमारी भागीरथी बाई से हुआ, जो 12 वर्ष की थीं। उनके पांच बच्चे थे: दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ।

रवि वर्मा के बचपन से ही चित्रकला के बीज दिखाई देने लगे। लकड़ी की कोयले और चारकोल से दीवारों पर चित्र बनाने लगे। त्रावणकोर के महाराजा अयिलम थिरुनल ने उनकी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें चित्रकला की विधिवत शिक्षा दी। उन्हें पहले तंजावुर की पारंपरिक शैली में प्रशिक्षित किया गया, फिर ब्रिटिश चित्रकार थियोडोर जेंसन से तेल चित्रण (oil painting) की बारीकियाँ सीखीं।

रवि वर्मा की कला की शैली में यूरोपीय यथार्थवाद और भारतीय परंपरा का समन्वय है। उनके चित्रों में भारतीय पौराणिक कथाएँ, नारी सौंदर्य, धार्मिक भावनाएँ और मानवीय संवेदनाएँ बहुत ही सुंदर चित्रित हैं। उन लोगों ने देवताओं को मानवीय रूप में चित्रित किया, जिससे लोग उनके चित्रों से आत्मीयता महसूस करते थे।

उनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

Realism: उन्होंने चेहरे के हाव-भाव, नेत्रों की भाषा और वस्त्रों की भव्यता को अत्यंत यथार्थ रूप में दिखाया।

छाया और रोशनी का प्रयोग: उन्होंने यूरोपीय तकनीक से प्रेरित होकर प्रकाश और अंधकार का अद्भुत संयोजन बनाया।

महिला सौंदर्य का वर्णन: उन्होंने भारतीय नारी को शालीनता, गरिमा और दिव्यता के साथ प्रस्तुत किया।

प्रमुख कृतियाँ

राजा रवि वर्मा की कुछ प्रसिद्ध कलाकृतियाँ निम्नलिखित हैं:

1. शकुंतला पत्र लिखती हुई
2. द्रौपदी चीरहरण
3. नल और दमयंती
4. गैलेक्सी ऑफ म्यूज़िशियंस
5. लक्ष्मी देवी

कुशाग्र जैन, राजा रवि वर्मा: भारतीय चित्रकला के महानायक, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 25-26*

6. सरस्वती देवी
7. सीता वनवास में
8. कृष्ण और यशोदा
9. उर्वशी और मेनका

इन चित्रों ने पौराणिक कथाओं को सजीव बना दिया।

1894 में, उन्होंने मुंबई के घाटकोपर में 'रवि वर्मा प्रेस' की स्थापना की, जहां उनके चित्रों की लिथोग्राफ प्रतियाँ बनाकर कम मूल्य पर बेची जाती थीं। इससे आम लोगों तक उनकी कला पहुंची। बाद में यह प्रेस लोनावाला स्थानांतरित किया गया। यह भारत का उस समय का सबसे बड़ा और उन्नत प्रिंटिंग प्रेस था।

भारतीय कला के इतिहास में उनकी ये पहल क्रांतिकारी थी, क्योंकि इससे आम जनता को देवी-देवताओं की सुंदर चित्रण देखने का अवसर मिला।

रवि वर्मा की कला को राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया:

- 1873: विएना आर्ट एक्सहिबिशन में पुरस्कार
- 1893: शिकागो वर्ल्ड फेयर में स्वर्ण पदक
- 1904: ब्रिटिश सरकार द्वारा 'कायसर-ए-हिंद' स्वर्ण पदक

रवि वर्मा ने नारी को भक्ति, शक्ति और सौंदर्य के रूप में चित्रित किया, हालांकि भारतीय समाज में नारी को परंपरागत भूमिकाओं में देखा जाता है। नारी उनके चित्रों में संस्कृति की संवाहिका और एक पात्र के रूप में उभरती है।

रवि वर्मा की लोकप्रियता के साथ-साथ उन्हें भी आलोचना मिली। उसकी कला को कुछ आलोचकों ने "कैलेंडर आर्ट" कहा और इसे सस्ता लोकप्रियतावाद बताया। उनके चित्रों को कुछ लोगों ने 'बहुत अधिक पश्चिमी' बताया। भारतीय जनता ने उनकी कला को दिल से माना।

रवि वर्मा की कलात्मक विरासत आज भी जीवित है:

- उनकी पोतियाँ त्रावणकोर के शाही परिवार में रानी बनीं।
- उनके वंशजों में प्रसिद्ध लेखक, संगीतज्ञ और कलाकार हुए।
- उनकी चित्रकला ने भारतीय फिल्मों और कैलेंडर कला पर गहरा प्रभाव डाला।
- 2013 में बुध ग्रह पर एक गड्ढे का नाम "वरमा क्रेटर" रखा गया।

रवि वर्मा के चित्रों को समकालीन कलाकार जैसे पुष्पमाला एन और नलिनी मलानी ने नए संदर्भों में पुनः प्रस्तुत किया है। अब भी, उनकी कलाकृतियां नीलामियों में करोड़ों में खरीदी जाती हैं।

राजा रवि वर्मा ने भारतीय संस्कृति को रंगों और भावनाओं में ढाला ही नहीं, बल्कि चित्र भी बनाए। वे न सिर्फ एक कलाकार थे, बल्कि एक सांस्कृतिक दृष्टा भी थे, जिन्होंने भारत की आत्मा को चित्रित किया। उनकी कला आज भी भारत की सांस्कृतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 29 अप्रैल को उनका जन्मदिन मनाकर हम एक ऐसे कलाकार को सम्मान देते हैं जिसने भारतीय कला को आम लोगों तक पहुंचाया।